

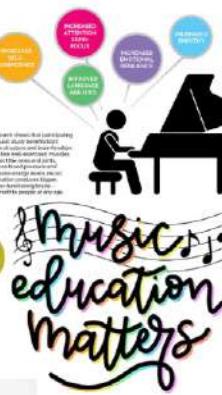
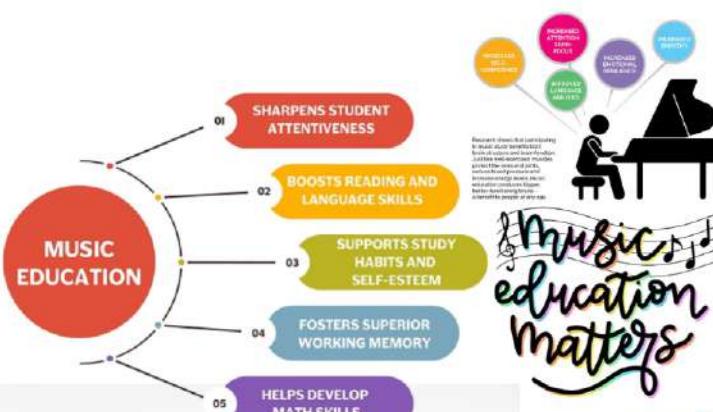


India's First E Magazine Dedicated to Indian Music
Monthly ,Bilingual

The logo for India's features the name 'संतान' (Santana) in a large, stylized font. The letters are composed of multiple overlapping colors, including red, orange, yellow, green, blue, and purple, creating a vibrant and dynamic appearance. A horizontal bar of the same multi-colored gradient runs across the middle of the text. In the top right corner, the word 'India's' is written in a smaller, dark blue sans-serif font.

વાદળ

November 2023 Year 1 Issue 8





Dr Vandana Khurana
Assistant Professor Vocal Music
Rajasthan Sangeet Sansthan,
Govt. P G College, Jaipur (Raj.)

संगीत वन्दन

संपादक की कृति थे...

संगीत वन्दन के सभी पाठकों को सादर प्रणाम

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि प्रत्येक वर्ष 11 नवंबर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए संगीत वन्दन का नवंबर अंक संगीत शिक्षा पर केंद्रित है।

‘शिक्षा में संगीत तथा संगीत में शिक्षा’

संगीत एक बहुआयामी कला है जो कि प्रारंभ में केवल मानवीय भावनाओं के प्रकटीकरण हेतु प्रयुक्त की जाती थी किंतु कालांतर में जैसे-जैसे मानव का बौद्धिक विकास हुआ वैसे-वैसे संगीत स्वयं में पूर्ण एक स्वतंत्र शास्त्र व विद्या के रूप में स्थापित होता गया। जिसके परिणाम स्वरूप संगीत मानवीय जीवन के कई लक्ष्य एवं प्रयोजनों की प्राप्ति हेतु एक उत्कृष्ट साधन सिद्ध हुआ। जब हम संगीत और शिक्षा, इन दो शब्दों को साथ में प्रयोग करते हैं तब इसे दो रूपों में देखते हैं -प्रथम ‘शिक्षा में संगीत’ तथा द्वितीय ‘संगीत में शिक्षा’। शिक्षा में संगीत से तात्पर्य है कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु दी जाने वाली शिक्षा में संगीत किस प्रकार सहायक हो सकता है या संगीत की क्या भूमिका रहती है तथा यह शिक्षण प्रक्रिया को कैसे प्रभावी बनाता है। ‘शिक्षा में संगीत’ को हम ‘संगीत द्वारा शिक्षा’ भी कह सकते हैं। द्वितीय रूप में अर्थात् संगीत में शिक्षा का तात्पर्य पूर्णतया संगीत की शास्त्रबद्ध एवं व्यवस्थित शिक्षा प्रदान कर विद्यार्थियों को जीविकोपार्जन हेतु तैयार करता है। सरल शब्दों में इसे संगीत शिक्षा प्राप्त करना भी कह सकते हैं।

शिक्षा का अर्थ केवल पाठ्यक्रम के विषयों का एवं उनसे जुड़े तथ्यों का स्मरण करवाना मात्र नहीं है, शिक्षा का अर्थ है व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास एवं विद्यार्थी को एक उच्च चरित्र वाला नागरिक बनाना जो समाज व देश के चरित्र निर्माण एवं विकास में सकारात्मक योगदान दे सके। इस अर्थ में संगीत के माध्यम से विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण का कार्य अत्यंत सहजता से किया जाना संभव है। संगीत द्वारा शिक्षा का अर्थ यह कर्तव्य नहीं है कि प्रत्येक विषय को संगीत के माध्यम से पढ़ाया जाए। संगीत द्वारा शिक्षा से यहां हमारा तात्पर्य सर्वांगीण विकास हेतु दी जाने वाली शिक्षा से है जिसमें संगीत व संगीत से जुड़ी गतिविधियों का योगदान एवं भूमिका को उजागर करता है।

कला शिक्षा एवं कला द्वारा शिक्षा -यह दोनों ही तत्व भारतीय शिक्षा व्यवस्था के अभिन्न अंग रहे हैं। कलाओं में एक महत्वपूर्ण स्थान रखनेवाली संगीत कला के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया एवं अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाया जाता रहा है। अनेकानेक शोध अध्ययनों द्वारा यह प्रमाणित हो चुका है कि संगीत कला विद्यार्थियों के भाषा कौशल में सुधार एवं विकास करती है। संगीत की ध्वनियां व गीतों के साथ विद्यार्थियों को कम समय में बड़ी संख्या में शब्दावली से अवगत कराया जाता है। साथ ही संगीत अन्य भाषाओं से भी परिचित करवाता है जिससे कि विद्यार्थियों को अलग-अलग भाषाओं को समझने एवं संवाद करने की क्षमता विकसित करने के लिए एक आधार मिलता है। इसके अतिरिक्त स्मृति कौशल, श्रवण कौशल, गणित कौशल, रचनात्मकता की वृद्धि आदि विद्यार्थियों को संगीत द्वारा शिक्षा से मिलने वाले लाभ हैं। संगीत द्वारा शिक्षा का प्रारंभिक रूप हमें बाल वाटिका अर्थात् प्ले स्कूल व नर्सरी स्कूल आदि में सिखाई जाने वाली छोटी-छोटी कविताओं (Rhymes) के पाठ में दिखाई देता है। विद्यालय में सिखाए जाने वाले समूह गीत, प्रार्थनाएं, प्रेरक गीत, देशभक्ति गीत आदि द्वारा विद्यार्थियों को न केवल देश भक्ति की भावना, महान व्यक्तित्वों से परिचय, संस्कार, धर्म आदि से परिचय करवा कर उनका चरित्र निर्माण करते हैं, बल्कि साथ ही विद्यार्थियों में एकता, सामंजस्यता, सामूहिकता, संगठन, सहयोग आदि विलक्षण गुणों का बीजारोपण कर उनका सर्वांगीण विकास करते हैं। कठिन विषय माना जाने वाले गणित के पहाड़े जब सिखाए जाते हैं तो उनमें एक धून और एक लय का समावेश कर रोचक बना दिया जाता है और उस धून और लय में बंधे हुए पहाड़े शैनः शैनः विद्यार्थियों के स्मृति पटल पर सदैव के लिए अंकित होने लगते हैं।

शिक्षा में संगीत को समावेशित करने के इन्हीं लाभों के कारण प्रारंभिक शिक्षा से ही अर्थात् कक्षा प्रथम से ही संगीत विषय को अन्य विषयों के साथ एक विषय के रूप में अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना अति आवश्यक है। हमारे देश में लागू नवीन शिक्षा नीति 2020 भी कलाओं के अध्ययन के महत्व को समझते हुए इसे अनिवार्य रूप से सम्मिलित करती है। प्रारंभिक विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक संगीत विषय (गायन, वादन, नृत्य) का अनिवार्य रूप से शिक्षण किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा सके।

संगीत में शिक्षा से तात्पर्य है – विद्यार्थी द्वारा संगीत(गायन, वादन, नृत्य) को ऐच्छिक विषय के रूप में चुन कर उसके शास्त्र एवं क्रिया पक्ष का गहन एवं व्यवस्थित अध्ययन करना। संगीत शिक्षा प्राचीन कालीन गुरु शिष्य परम्परा से प्रारंभ होकर आज आधुनिक काल में संस्थागत प्रणाली के द्वारा परिपूर्ण हो रही है। संगीत शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थियों को अपने जीविकोपार्जन के लिए व्यवसाय के बहुत से विकल्प प्राप्त होते हैं जिनमें सर्वप्रथम हैं- मंच कलाकार बनना। इसके अतिरिक्त अनेकानेक विकल्प हैं जैसे - संगीत शिक्षक, संगीत निर्देशक, समीक्षक-पत्रकार, वाय निर्माता, शास्त्रकार, प्रकाशक , music therapist, sound engineer, studio recordist आदि।

संगीत शिक्षा औपचारिक एवं अनौपचारिक, दोनों ही रूप में प्राप्त की जाती है। अनौपचारिक रूप से विद्यार्थी किसी संगीत गुरु से शिक्षा प्राप्त करते हैं जिनमें कोई समय सीमा निर्धारित नहीं होती एवं शिक्षा पूर्ण होने पर उपाधि, प्रमाण पत्र आदि का प्रावधान नहीं होता। जब कि औपचारिक रूप से संगीत शिक्षा हेतु विद्यार्थी उच्च माध्यमिक स्तर पर और आगे चलकर उच्च शिक्षा में इसे ऐच्छिक विषय के रूप में चुनते हैं और उसमें विशेषज्ञता प्राप्त करते हैं। औपचारिक शिक्षा में निश्चित समय सीमा होती है तथा शिक्षा पूर्ण होने पर उपाधि, प्रमाणपत्र भी दिया जाता है।



‘संगीत में शिक्षा’ हेतु भी यह बहुत आवश्यक कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर से ही विद्यार्थी संगीत का ज्ञान प्राप्त करे क्योंकि यह देखा गया है और प्रमाणित भी हो चुका है कि बाल्यकाल से ही जो संगीत शिक्षा प्राप्त करते हैं उन्हें उच्च शिक्षा में अधिक सफलता प्राप्त होती है। अब सभी कलाओं की भाँति संगीत भी अभ्यास की कला है, जो जितना अधिक अभ्यास करता है उसकी कला उतनी ही निखर कर परिलक्षित होती है। संगीत कला भारतीय संस्कृति का दर्पण है। संगीत कला और इसकी शिक्षा स्वयं में भारतीय संस्कृति के समस्त संस्कारों को समाहित किए हुए हैं। अतः प्रत्येक विद्यार्थी को इस कला से परिचित होना और इसे आत्मसात करना अत्यावश्यक है तभी हमारे देश की परम्परा और संस्कृति का संरक्षण सम्भव है।

सभी लेखकों से ई-पत्रिका हेतु संगीत से संबंधित स्वतंत्र आलेख एवं ई पत्रिका के नियमित भागों (किताबों की बातें, लोकरंग, news and events एवं फ़िल्म संगीत) पर आधारित आलेख एवं संझाव सटैव आमंत्रित हैं।

पं. विष्णु नारायण भातखण्डे और पं. विष्णु दिगम्बर पुलस्कर जी का संगीत शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार में योगदान

आधुनिक समय के संगीत विद्वानों में पंडित भातखण्डे जी और पं. विष्णु दिगम्बर पुलस्कर जी का नाम बड़े ही आदर से लिया जाता है। इन दोनों महान विद्वानों ने अपने महानतापूर्ण कार्यों से न केवल संगीत के विषय में अनेकों आविष्कार किए अपितु 20वीं शताब्दी में संगीत को उन्नति की चरमसीमा पर पहुंचा दिया। इसका अनुभाव हम संगीत के प्रति लोगों की रुचि को देखकर भलीभांति लगा सकते हैं।

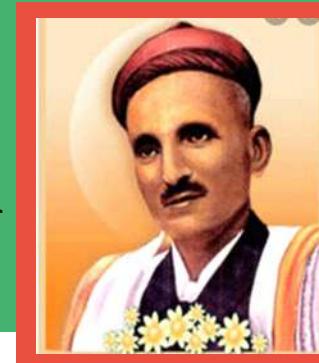
पं. विष्णु नारायण भातखण्डे

संगीत विषय को आमजन के लिए सरल एवं सुलभ बनाने का श्रेय पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे को जाता है।

संगीत की संस्थागत शिक्षा में क्रांति लाने वाले पं. भातखण्डे का जन्म 10 अगस्त, 1860 को मुंबई में हुआ था।

संगीत में अत्यधिक रुचि होने के कारण पं. जी ने सितार व गायन की शिक्षा भी ग्रहण की। इनके माता-पिता संगीत के अत्यधिक प्रेमी थे अतः बाल्यकाल से ही इनको गाने का शौक हो गया।

इतनी कम उम्र में बालक की संगीत में विशेष रुचि देखकर उनके माता-पिता को अनुभव हुआ कि इस बालक को संगीत की ईश्वरीय देन है, इसलिए इनके माता-पिता ने बालक की उचित शिक्षा की व्यवस्था की। पं० भातखण्डे जी ने 1883 ई. में बी.ए. और 1890 ई. में एल.एल.बी. की परीक्षा पास की।



संगीत - शिक्षा एवं शोध

संगीत के प्रति गृह प्रेम तो इनके हृदय में बाल्यकाल से था ही कुछ बड़े होने पर इनको भारतीय संगीत कला के प्रसिद्ध कलाकारों को सुनने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ, जिनसे पं० जी अत्यन्त प्रभावित हुए तथा सोई हुई संगीत जिजासा जाग उठी। इसके बाद इन्हें संगीत कला को और अधिक गहराई से जानने की इच्छा हुई, इसलिए उन्होंने मुंबई आकर 'गायक उत्तेजन मंडल' में कुछ दिनों तक संगीत की शिक्षा ग्रहण की तथा अनेकों पुस्तकों का अध्ययन किया। इन्होंने दक्षिण के अनेक विद्वानों के साथ चर्चा में भाग लिया। जिसमें इन्होंने पं. व्यंकटमुखी के 72 थाटों का भी पाठन किया। 1906 ई० में इन्होंने उत्तरी तथा पूर्वी भारत की यात्रा की। इसमें उन्होंने उत्तरी संगीत पद्धति की जानकारी प्राप्त की। 1907 ई० में विजयनगर, हैदराबाद, जगन्नाथपुरी, नागपुर तथा कलकत्ता की यात्रा की तथा 1908 में मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश के विभिन्न नगरों का भ्रमण किया।

संगीत के क्षेत्र में योगदान

पं. विष्णु नारायण भातखण्डे जी ने सैकड़ों स्थानों का भ्रमण कर संगीत संबंधी साहित्य की खोज की। इसके अतिरिक्त इन्होंने देखा कि बड़े-बड़े संगीतज्ञ राग नियमों को अनदेखा कर गायन करते हैं, गायन का स्वर स्वरूप नहीं जानते। इसे आधार बनाकर पंडित जी ने राग-रागिणी पद्धति, थाट प्रणाली, आदि का प्रचार किया। इस कारण थाट पद्धति प्रचार में आई तथा 72 थाटों में से कुल दस (10) थाट ही सर्वमात्र हुए। संगीत को उन्होंने शैक्षणिक स्तर पर अग्रसर किया। विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में संगीत शिक्षा की ओर ध्यान दिया। इसमें लखनऊ का मैरिस कॉलेज जिसे अब भातखण्डे यूनीवर्सिटी ऑफ म्यूजिक के नाम से जाना जाता है ग्वालियर का माधव संगीत विद्यालय तथा बड़ौदा का म्यूजिक कॉलेज विशेष है। इन्होंने संगीत के क्षेत्र में तीसरा महान एवं विशेष कार्य स्वरलिपि पद्धति के विर्माण का किया। भारतीय संगीत की स्वरलिपि पद्धति सरल एवं स्पष्ट है। भातखण्डे जी संगीत के साथ-2 कविता करने में भी निपुण थे। पंडित जी की अनेकों बन्दिशों में इनको 'चतुर' उपनाम से भी जाना जाता है। अनेक प्राचीन विद्वानों की बंदिशों का संकलन इन्होंने अपनी पुस्तक में किया है। पं. भातखण्डे जी चोरी से गुरुजनों की बन्दिशों को सुनते और उन प्राचीन बंदिशों को एकत्रित करते। इसी कारण भातखण्डे जी को चतुर कहा जाने लगा तथा बाद में चतुर पंडित के नाम से जाना जाने लगा।

प्रमुख पुस्तकें:-

संगीत के क्षेत्र में लिखित सामग्री की दृष्टि से इन्होंने अनेकों पुस्तकों के लिए लेखन का कार्य किया। इन्होंने मराठी भाषा में लिखित हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति (भाग-4) लक्ष्य संगीत, क्रमिक पुस्तक मलिका (भाग-6), अभिनव राग मंजरी, श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम, गीत मालिका, ए शार्ट सर्वे ऑफ द म्यूजिक ऑफ अवर इण्डिया आदि इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं। जिनका अध्ययन आधुनिक शिक्षण संस्थानों में संगीत के शोधार्थीयों, विद्यार्थीयों द्वारा अत्यधिक रूप में किया जाता है। अतः पं. भातखण्डे जी द्वारा लिखी पुस्तकें संगीत के शिक्षण स्तर को सुधारने और उसको और अधिक ऊपर उठाने के लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हो रही है।

पंडित विष्णु दिगम्बर पुलस्कर

आधुनिक समय के महान संगीतकारों में पंडित विष्णु दिगम्बर प्लुस्कर का नाम अत्यन्त लोकप्रिय है। इनका जन्म 18 अगस्त 1872 ई० में महाराष्ट्र राज्य के कुरुन्दवाड़, रियासत बेलगांव में हुआ। इनके पिताजी का नाम श्री दिगम्बर गोपाल तथा माता जी का नाम श्रीमती गंगा देवी था। पं. विष्णु दिगम्बर पुलस्कर जी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में एक विशिष्ट प्रतिभा के धनी थे जिन्होंने भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पंडित जी भारतीय समाज में और संगीतकार की उच्च प्रतिष्ठा के पुनरुद्धारक, समर्थ संगीतगुरु, अप्रतिम कंठस्वर एवं गायन कौशल के धनी भक्त हृदय गायक थे। प्लुस्कर ने स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों में महात्मा गांधी की सभाओं सहित भिन्न-2 मंचों पर रामधुन गाकर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाया। इन्होंने संगीत की शिक्षा बालकृष्णबुआ इचलकरंजीकर जी से प्राप्त की।

संगीत के क्षेत्र में योगदान:-

संगीत जगत पं. विष्णु दिगम्बर प्लुस्कर द्वारा संगीत में दिए गए महान योगदान के लिए हमेशा क्रणी

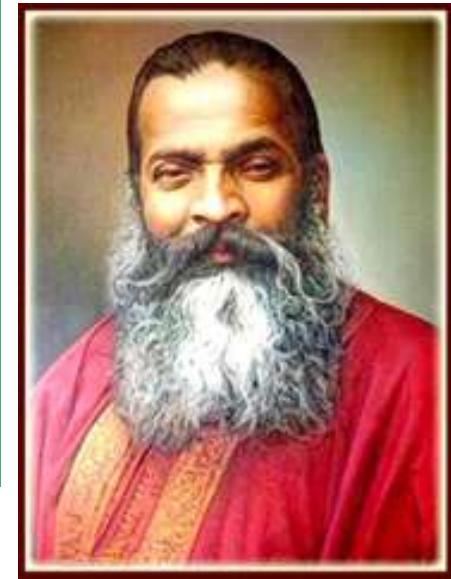
रहेंगा। पंडित जी ने संगीत को एक विषय के रूप में शिक्षण स्तर पर लाने के लिए बड़ा योगदान

दिया। इन्होंने 1896 ई० में संगीत के प्रचार-प्रसार के लिए जब भ्रमण शुरू किया तो इन्होंने एक बहुत

बड़ी दयनीय दशा को देखा तथा संगीत को सम्मानित स्थान दिलाने की प्रतिज्ञा की तथा इसके लिए ये निरन्तर कार्यरत रहे। इन्होंने अनेक प्रयासों से संगीत के विद्यालय एवं महाविद्यालय भी स्थापित किए। इन्होंने 15 मई 1901 में लाहौर में ‘गंधर्व महाविद्यालय’ की स्थापना की, तथा इसके पश्चात इसी की एक शाखा बंबई में स्थापित की जो कि ‘गंधर्व महाविद्यालय मंडल’ के नाम से महान संगीत संस्था के रूप में ज्याति प्राप्त कर रही है। बंबई में इस शाखा को लाहौर की अपेक्षा अत्यधिक प्रतिष्ठा मिली। इनमें विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती गई तथा विद्यार्थियों द्वारा दी गई फीस से विद्यालय का संपूर्ण कार्य सुचारू रूप से 1912 ई. तक चलता रहा।

संगीत से संबंधित पुस्तकें:-

पं. विष्णु दिगम्बर प्लुस्कर जी ने संगीत के क्षेत्र में 50 के लगभग पुस्तकें लिखी। इनमें से कुछ प्रमुख पुस्तकें हैं - बाल-बोध, बाल-प्रकाश, राग-प्रवेश, संगीत शिक्षण, शास्त्रीय संगीत, व्यायाम के साथ संगीत, महिला संगीत इत्यादि के नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। पं० जी ने संगीत को जब-साधारण तक प्रसारित करने के लिए ‘संगीतामृत-प्रवाह’ मासिक पत्र भी निकाला। इनके प्रमुख शिष्यों में पं. आंकारनाथ ठाकुर, पं. विनायक राव पटवर्धन, पं. वामनराव पाठ्ये इत्यादि इनके विशेष शिष्यों में से हैं। पं० डी०वी० प्लुस्कर इनके प्रमुख शिष्य तथा इन्हीं के पुत्र हैं। अन्ततः यह कहना गलत न होगा कि उत्तरी भारतीय संगीत पद्धति के उद्घारक पं. विष्णु नारायण भातखण्डे और दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति के प्रणेता पं. विष्णु दिगम्बर प्लुस्कर जी दोनों ही संगीत क्षेत्र में एक समान अस्तित्व वाले समझे जाएंगे, क्योंकि दोनों ही महान संगीतज्ञों ने संगीत के प्रचार-प्रसार और संगीत को शिक्षण स्तर पर लाने का संगीत जगत में अद्वितीय एवं कभी न भुलाया जाने वाला महान कार्य किया।



डॉ. दर्शना
सहायक प्रोफेसर, संगीत गायन
सनातन धर्म कन्या महाविद्यालय
उचाना मण्डी, जीन्द्र हरियाणा

हिंदी फ़िल्म संगीत के रोचक किसे.... संगीत वन्दन

एक छोटी सी गलती के कारण फ़िल्म से हट गया था ये खूबसूरत गीत ये किस्सा 1962 में बनी फ़िल्म 'एक मुसाफिर एक हसीना' से जुड़ा है। फ़िल्म का संगीत दिया था ओ.पी.नैयर ने और गीत लिखे थे राजा मेहंदी अली खान ने। इस फ़िल्म के लगभग सभी गाने लोकप्रिय हुए। एक गीत ऐसा था जो बहुत अच्छा बना, रेकॉर्ड हुआ लेकिन फ़िल्म में नहीं रखा गया, यानी उसे केवल ऑडियो रूप में रखा गया। यह गीत था 'मैं प्यार का राही हूँ' जिसे गाया था मोहम्मद रफ़ी साहब और आशा भोसले जी ने। इस गीत में ओ पी नैयर के विशिष्ट अंदाज़ की धुन और बीट है, जिसे बेहद खूबसूरती से गाया गया है। गीत में दो अन्तरे हैं। हुआ यूँ, कि गीत के दोनों अंतरों की आखरी दो पंक्तियां गलत गा दी गयीं। यानी पहले अन्तरे की लाइन दूसरे में और दूसरे की पहले में गा दी गयी।

पहला अंतरा

रफ़ी: तेरे बिन जी लगे ना अकेले
आशा: हो सके तो मुझे साथ ले ले

रफ़ी: नाज़नीं तू नहीं जा सकेगी
छोड़कर जिन्दगी के झगड़े, नाज़नीं...

इसके बाद आशा जी गाती हैं-

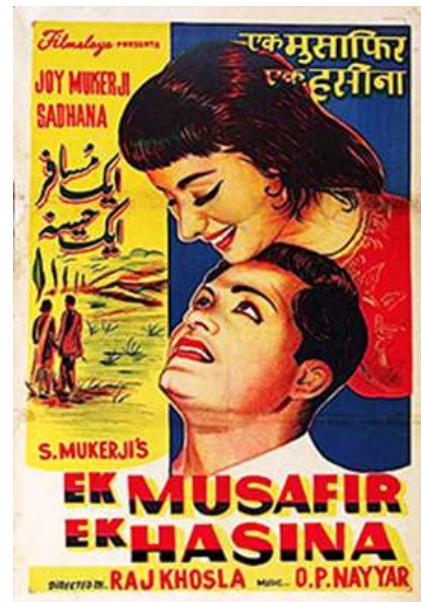
'जब भी छाए घटा याद करना ज़रा,
सात रंगों की हूँ मैं कहानी'
(ये पंक्तियां दूसरे अन्तरे में आवी चाहिए थीं)

दूसरा अंतरा

रफ़ी: प्यार की बिजलियाँ मुस्कुराएं
आशा: देखिये आप पर गिर न जाएं
रफ़ी: दिल कहे देखता ही रहूँ मैं
सामने बैठकर ये अदाएं, दिल कहे...

इसके बाद वो पंक्तियां जो पहले अन्तरे में आवी चाहिए थीं -

'न मैं हूँ नाज़नीं न मैं हूँ महजबीं
आप ही की नज़र है दीवानी'



यह त्रुटि किसीके भी स्तर पर हुई हो, लेकिन यह गीत फ़िल्म में ना होते हुए भी खूब पसंद किया गया और आज तक सराहा जाता है।

<https://youtu.be/WtP8VL136uI?feature=shared>

गीत से जुड़ा एक आलेख

<https://www.hardnewsmedia.com/2021/09/singing-errors-in-tune-glaring-mistakes-in-indian-film-songs-does-it-matter/>

महान संगीतकार ओ पी नैयर द्वारा संगीतबद्ध सदाबहार गीत आज तक सभी संगीत महफिलों और मंच प्रस्तुतियों में खूब गाये जाते हैं और श्रोताओं को तरो ताज़ा कर देते हैं।



Dr. Gaurav Jain
Renowned vocalist and Asst. Prof. Music Vocal,
Rajasthan Sangeet Sansthan, Jaipur

लोकरंग...

मिजोरम का लोक वाद्य 'टिंगटैंग'

एक तंत्री वाद्य की श्रेणी में आने वाला मिजोरम राज्य का लोक वाद्य 'टिंगटैंग' अक्सर मिजो गिटार के रूप में जाना जाता है। यह एक प्रकार की सारंगी या वायलिन है जिसमें केवल एक तार होता है। इस वाद्य में कद्दू में बांस की छड़ी का एक टुकड़ा लगा दिया जाता है और तार थांग तुंग से बना होता है जो मलय सागो पाम का फाइबर होता है। यह वाद्य अद्वितीय एवं मधुर ध्वनियां उत्पन्न करता है। संगीतकारों द्वारा धनुष की सहायता से इसे बजाया जाता है।

टिंगटैंग वाद्य का वादन सुनने के लिए नीचे दिए गए गए लिंक पर क्लिक कीजिए

https://youtube.com/shorts/gKKYXbOH3LI?si=kkoCmd6bEb7o_xJR



संगीत वन्दन
India's First & Magazine Dedicated to Indian Music
Volume 1, 21 August

किताबों की बातें...

पुस्तक का नाम - संगीत मंतव्य (सांगीतिक लेख संग्रह)

संपादक - डॉ० आकांक्षा पाल

प्रकाशन - दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस ग्रेटर नोएडा

प्रथम संस्करण - 2022

ISBN :- 978-93-91251-32-1

प्रस्तुत पुस्तक आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर प्रकाशित की गयी है। इस पुस्तक में संगीत विषयक लेखों का संग्रह है जिसका सम्पादन डॉ० आकांक्षा पाल द्वारा किया गया है। वर्तमान समय में आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालय, चौधरी महादेव प्रसाद डिग्री कॉलेज, प्रयागराज 1/4उत्तर प्रदेश 1/2 के संगीत विभाग में अतिथि प्रवक्ता (गायत) के पद पर कार्यरत है। इसके अतिरिक्त आपने प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज से संगीत प्रवीण (गायत) किया है और इसके साथ ही आप आकाशवाणी एवं दूरदर्शन प्रयागराज की चयनित कलाकार भी हैं। यह पुस्तक 53 लेखों का संग्रह है जो की 10 खण्डों में विभक्त हैं वह 10 खण्ड इस प्रकार हैं -

1. भारतीय संगीत का सैद्धान्तिक पक्ष
2. संगीत - शिक्षण
3. व्यक्तित्व एवं कृतित्व
4. विभिन्न वाद्य संबंधी लेख
5. नृत्य एवं नाट्य कला
6. संगीत एवं राग ध्यान
7. विभिन्न सांगीतिक घराने
8. संगीत चिकित्सा
9. लोक संगीत
10. अन्तर्विषयक सांगीतिक लेख



इस प्रकार यह पुस्तक संगीत के विभिन्न पक्षों पर केंद्रित शोध परख लेखों का संकलन है जो की संपूर्ण भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों के संगीतानुरागी विद्वानों एवं शोधार्थियों की आत्मानुभूति से सृजित हुए हैं।

अतः यह पुस्तक संगीत जगत से सम्बद्ध विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों एवं संगीत प्रेमी सुधीजनों हेतु अत्यन्त ही उपादेय एवं संग्रहणीय है। इसके अतिरिक्त यह पुस्तक Amazon पर भी उपलब्ध है।

NEWS & EVENT....

1. देहरादून के विरासत 2023 में गूंजे स्वर कोकिला कौशिकी के मधुर स्वर



दिनांक 1 नवंबर 2023 को देहरादून के डॉ बी आर अंबेडकर स्टेडियम में आयोजित विरासत 2023 में देश की सुप्रसिद्ध युवा शास्त्रीय गायिका श्रीमती कौशिकी चक्रवर्ती ने अपने सुमधुर शास्त्रीय गायन प्रस्तुति से श्रोताओं को भाव विभोर किया।

2. कानपुर में संपन्न हुआ 'काशी वीणा संगीत समारोह'



दिनांक 4 नवंबर एवं 5 नवंबर 2023 को कानपुर के राजेंद्र स्वरूप ऑडिटोरियम में आईटीसी मिनी संगीत सम्मेलन 2023 के अंतर्गत काशी वीणा संगीत समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रथम दिवस पर सितार वादक अयान सेनगुप्ता ने सितार वादन तथा पंडित औंकार दादरकर ने एकल शास्त्रीय गायन प्रस्तुति दी तथा द्वितीय दिवस पर सुश्री मौपली चौधरी ने एकल शास्त्रीय गायन तथा पंडित नयन घोष ने एकल तबला वादन प्रस्तुत किया। दोनों ही दिन कलाकारों ने अपनी भावमयी से समान बांधा।

3. बैंगलुरु में संपन्न हुआ 'वृत्य संगीता'



दिनांक 19 नवंबर 2023 को उत्तर कन्नड़ा के टी आर सी हाल में बैंगलुरु की सप्तक संस्था द्वारा 'वृत्य संगीता' कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें सुविष्यात शास्त्रीय गायिका श्रीमती अश्विनी भिडे देशपांडे जी का शास्त्रीय गायन तथा हैदराबाद की सुप्रसिद्ध कथक वृत्यांगना श्रीमती मुक्ति श्री का कथक वृत्य प्रस्तुति हुई।

4. 'भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत का अंतः संबंध' विषय पर संपन्न हुई दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत एवं ललित कला संकाय द्वारा दिनांक 22 नवंबर एवं 23 नवंबर 2023 को 'भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत का अंतः संबंध' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रथम दिवस पर मुख्य वक्ता रहे- सांसद एवं सुप्रसिद्ध भोजपुरी लोक कलाकार श्री मनोज तिवारी तथा इसी दिन का मुख्य आकर्षण रहा सुप्रसिद्ध लोक गायिका पद्मश्री श्रीमती मालिनी अवस्थी एवं उनके समूह द्वारा की गई लोक गायन प्रस्तुति। द्वितीय दिवस पर तीन सत्रों में क्रमशः आंध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा राजस्थान के लोकगीतों की प्रस्तुति के साथ संगोष्ठी का समापन हुआ।

5. नई दिल्ली में संपन्न हुआ- '11वां गुरु एम एल कौसर वृत्य एवं संगीत उत्सव'



दिनांक 25 नवंबर एवं 26 नवंबर 2023 को संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार तथा प्राचीन कला केंद्र के संयुक्त तत्वाधान में '11वां गुरु एम एल कौसर वृत्य एवं संगीत उत्सव' संपन्न हुआ। प्रथम दिवस पर श्री देव प्रिया अधिकारी एवं श्री समन्वय सरकार द्वारा सितार एवं सरोद वाद्यों की जुगलबंदी प्रस्तुत की गई तथा अंत में सुप्रसिद्ध ओडिसी वृत्यांगना सुजाता मोहपात्र एवं उनके समूह ने ओडिसी वृत्य प्रस्तुत किया। द्वितीय दिवस पर श्रीमती हंड्राणी मुख्यर्जी का शास्त्रीय गायन एवं श्री रंजीत बोर्ट का ड्रम वादन तथा श्री दीपक पंडित का वायलिन वादन की प्रस्तुति वे कार्यक्रम को सफल बनाया।

6. जयपुर में संपन्न हुआ सात दिवसीय 'धरती धोरां री' महोत्सव'



दिनांक 16 नवंबर से 22 नवंबर 2023 तक जयपुर के महाराणा प्रताप सभागार में लोक संस्कृति व लोक कलाओं को परिलक्षित करने हेतु आयोजित किया गया 'धरती धोरां री' महोत्सव। यह कार्यक्रम इंफोसिस फाउंडेशन एवं भारतीय विद्या भवन के संयुक्त तत्वाधान में किया गया जिसमें विभिन्न लोक कलाओं, लोक वृत्य, , लोक वादन एवं कार्यशालाओं आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

7. जयपुर के जवाहर कला केंद्र में सजा 'लोक रंग'



दिनांक 29 अक्टूबर से 8 नवंबर, 2023 तक जयपुर स्थित जवाहर कला केंद्र में लोक रंग महोत्सव मनाया गया जिसमें देश के 26 राज्यों के ढाई हजार से भी अधिक कलाकारों ने भाग लिया। लोक कलाओं के प्रदर्शन के साथ-साथ हस्तशिल्प उत्पादों की प्रदर्शनी ने इस महोत्सव को और भी आकर्षित बनाया। लोक रंग के अंतिम दिवस पर 12 राज्यों के 20 दुर्लभ वाय यंत्रों का एक साथ वादन देश की संस्कृति की विशेषता 'अनेकता में एकता' को परिलक्षित करने वाला था।

8. हैदराबाद में संपन्न हुआ छह दिवसीय (24 नवंबर से 29 नवंबर, 2023) पंडित मोती राम पंडित मणिराम संगीत समारोह



विख्यात संगीतज्ञ संगीत मार्टड पंडित जसराज की यादों से जुड़ा 51वाँ पंडित मोतीराम पंडित मणिराम संगीत समारोह सीसीआरटी, हाईटेक सिटी में संपन्न हुआ। पंडित जसराज के शिष्य और प्रख्यात शास्त्रीय गायक पंडित रतन मोहन शर्मा और पचूजन संगीत के कलाकार व जिटार के रचनाकार नीलाद्वि कुमार ने संगीत प्रेमियों को मंत्रमुग्ध किया। पंडित रतन मोहन शर्मा के मार्गदर्शन में मेवाती घराने के युवा कलाकारों के गायन से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। राधिका पारिख एवं मधुश्री नारायण ने प्रस्तुति से संगीत प्रेमियों का दिल मोह लिया। हैदराबाद के वरिष्ठ संगीत कलाकार सुरेंद्र भारती ने हारमोनियम और हरिजीत ने तबले पर संगत की। सितार वादक नीलाद्वि कुमार ने अपनी कला से संगीत प्रेमियों को मंत्रमुग्ध किया। उनके साथ यशवंत वैष्णव ने तबले पर संगत की। छह दिवसीय संगीत समारोह में शनिवार, 25 नवंबर को शौकनक अभिषेकी और उस्मान मीर, रविवार, 26 नवंबर को पंडित नयन घोष और ईशान घोष की (जुगलबंदी) के अलावा आनंद भाटे, आर्य अम्बेकर तथा विकास पारिख का कला प्रदर्शन हुआ। 27 नवंबर को स्वर शर्मा और सिद्ध श्रीराम शर्मा, 28 नवंबर को सूर्यगायत्री एवं पंडित वेंकटेश कुमार, 29 नवंबर को असावरी देगलुरकर और गज़ल एवं भजन गायक अनूप जलोटा का कार्यक्रम हुआ। संगीत समारोह के अंतिम दिन पंडित जसराज की संग्रहित प्रस्तुति के साथ अंकिता जोशी, रुचिरा केदार, रुतुजा लाड, धनश्री धैसास, यामिनी रेड्डी, आरुषि मुद्दल, शिजिनी कुलकर्णी, प्रणिता कृष्णा, दीपक पंडित, केदार पंडित और आनंद शर्मा प्रस्तुत हुए।

संगीत वन्दन के पाठक भारतीय संगीत से जुड़े किसी भी विषय पर
अपना Original Article ,हिंदी या English में
E-Mail कर सकते हैं ।

हम अगले अंक में उसे सम्मिलित करने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

DOC /WORD format
हिंदी - Mangal, Laila /Unicode font

English - Times New Roman

Email - vandansangeet@gmail.com

Mobile/Whatsapp - 9664257501

For more details, Visit our website

www.sangeetvandan.in

Facebook Page

[https://www.facebook.com/profile.php?id=100090183618512&mibextid=ZbWKwL](https://www.facebook.com/profile.php?id=100090183618512&mibextid>ZbWKwL)

Instagram

<https://instagram.com/sangeet.vandan?igshid=ZDdkNTZiNTM=>

Twitter

<https://twitter.com/vandansangeet?t=joYXnoPU8HxpDxhOd1mu4Q&s=08>

Youtube

<https://youtube.com/@SangeetVandan>

GUIDELINES

Articles submitted for publication should be solely original and unpublished

All individuals listed as author or co-authors must make substantial contributions and approve the final version of the article to be published.

The contribution of other individuals/ organizations or sources should be recognized as per law.

Authors are responsible for any copyright clearance, factual inaccuracies and opinion expressed in their paper.

The editorial board will review article and the approved/recommended articles shall be published in the upcoming issues.

The views expressed in the articles are the views of author/authors. It is not essential for editorial board members to be in agreement or disagreement. The sole responsibilities of the views expressed in article are of the author/authors.

All decisions regarding members of Advisory board, Editorial board, Review board, Referee will rest with Editor-in -Chief.